International Journal of Applied Research 2023; 9(2): 343-346

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(2): 343-346
www.allresearchjournal.com
Received: 06-12-2022
Accepted: 07-02-2023

डॉ. वर्चसा सैनी
सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, जे०के०पी०पी०जी० कॉलेज, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. वर्चसा सैनी
सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, जे०के०पी०पी०जी० कॉलेज, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश, भारत

गांधीजी की सामाजिक परिकल्पना और आज का समाज

डॉ. वर्चसा सैनी

सारांश
भारतीय लोकजीवन में गांधीजी का प्रवेश इस युग की सबसे महत्वपूर्ण घटना है। वह हमारे जीवन में प्रकाशपुंज के रूप में आये और आने के साथ ही उन्होंने हमें उस विराट नैतिक स्वरूप का दर्शन कराया जिसे हम भूल गये थे। उन्होंने समाज में फैली अराजकता एवं बुराइयों को दूर करके मानव के हृदय में आत्मविश्वास एवं साहस को जगाया।
भारतीय राजनीति में गांधी के पदार्पण के पूर्व के दिनों में मुख्यतः जो दो विचारधाराओं का प्रचलन था, उनमें एक सामाजिक सुधार की पक्षपाती थी तो दुसरी यह दलील रखती थी कि औपनिवेशिक शासन ही मुख्य दुश्मन है और इसकी समाप्ति के बाद सामाजिक सुधार स्वयं स्वरूप ग्रहण कर लेगा। गांधी ने इन दोनों विचारधाराओं को एक साथ लेकर प्रस्थान किया– आजादी की लड़ाई का नेतृत्व संभला तथा सामाजिक सुधार कार्य के रूप में अस्पृश्यता मिटाने का संघर्ष भी शुरू किया। दुसरी तरफ, जहाँ धार्मिक पुनरुत्थानवादी हिन्द यथास्थिति को परम्परा के नाम पर कायम रखना चाहतें थे, वहीं प्रबुद्ध जन ब्राह्मण संस्कृति के विरोध में उपद्रवी रूख अपना रहें थे, ऐसी स्थिति में गांधी ने कहा कि हिन्दु धर्म अस्पृश्यता को नहीं मानता और इस परस्पर विरोध का समाधान अछुतों को बराबरी का दर्जा देकर तथा हिन्दु–हृदय को उनके प्रति सदभाव में परिवर्तित कर ही किया जा सकता है। सन् 1920 ई० ओर 1921 के कांग्रेस के अधिवेशनों में जिसमें असहयोग आन्दोलन शुरू करने का निर्णय लिया गया, प्रस्ताव पारित कर यह दर्शाया गया कि प्रत्येक सत्याग्रही अस्पृश्यता के खिलाफ न सिर्फ संघर्ष करेगा, बल्कि अछूतों से सम्पर्क रख उनकी यथासंभव मदद करेगा। गांधी ने अस्पृश्यता उन्मूलन को राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन का अन्योन्यश्रय अंग बनाया तथा स्वाधीनता संग्राम के सेनानियों के लिए यह ऐसा महत्वपूर्ण कर्तव्य बनाया, जिसे अखिल भारतीय पैमाने पर स्वीकृति मिली।

कूटशब्द : सामाजिक परिकल्पना, आज का समाज, भारतीय राजनीति

प्रस्तावना
गांधीजी आज के समाज के महानतम् पुरूषों में पांक्तेय है, जिन्होंने तत्कालीन सामजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिवर्तनकारी शक्तियो से अपनी अमिट छाप छोड़ी है। गांधीजी जिस समय भारत की आजादी के लिए लड़ रहे थे उस समय उनके मस्तिष्क में विश्व के उन तमाम लोगो को मुक्त कराने की अनुपम योजना थी, जो दासता के चंगुल में फंसे थे। न केवल स्वतंत्रता संग्राम अपितु नैतिक एवं सामाजिक संग्राम के सर्वश्रेष्ठ नायक, कोटि–कोटि जनता के प्रति कठिन राजनीतिक संघर्ष के अग्रणि नेता महात्मा गांधी एक संत थे या राजनीतिक। इस प्रश्न ही उत्तर अनेक प्रकार से दिया गया है, किन्तु सत्य तो यह है कि गांधीजी ने धर्म और नीति का आचरण करते हुए, अपनी कथनी और करनी से समाजस्य स्थापित करते हुए, एक सच्चे ईशान की जिंदगी जीने की कौशिश की। स्वयं को सत्य का शोधक कहा, उनका स्वरूप संतत्व राजनीतिक था। उनके दर्शन के सत्य और अहिंसा के दर्शन में देखा जा सकता है। वास्तव में गांधीवादी दर्शन मानव समाज की बुनियादी ओं से निजात पाने की दवा है। आज भी सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक समस्याओं का निदान बापू के दर्शन एवं उनके द्वारा बताये गये मार्ग पर चलकर ही किया जा सकता है, क्योंकि अधिकाधिक दुर्व्यसनों को आवरण में छिपाने की आकांक्षा से ही आधुनिक समाज में निराशा, दमन और शोषण का भाव है। उन्होंने इन सबको समाधान आध्यात्मिक ढंग से करने का प्रयास किया। उन्होंने अपने आ यत्मिक ज्ञान के विषय के मूल में प्रवेश का अनुभव किया कि बिना जीवन के मूल उद्येश्यों को समझने तथा बिनास विकृत मस्तिष्क के उपचार के विश्व संगठन या विश्व बन्धुत्व की कल्पना को साक्षात्कार नहीं किया जा सकता।
विश्व के इतिहास में कोई ऐसा दूसरा उदाहरण देखने को नहीं मिलता है जिसमें किसी एक व्यक्ति के प्रयास ने लाखों पीडित मानवों के कष्टों को दूर करके उन्हें अपने पैरों पर पुनः खड़ा करने में सहायक हुआ हो। आज हम गांधीजी के विचारों से दूर हो जा रहे है, किन्तु आवश्यकता इसकी है

कि हमें उनके विचारों को लोगों के समक्ष लाना होगा, जिससे कि लाखों लोगों का कल्याण हो सके। मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लगातार अवनति होता जा रहा और गांधीजी के विचारों को अपनाकर इस अवनति को रोका जा सकता है। गांधीजी अपने नैतिक मूल्य एवं विचारों के द्वारा ही अंग्रेजों के साम्राज्य को पराभूत किये थे और लोगों के अन्दर नैतिक मूल्यों को जगाया ताकि लोग बुराई का उठकर विरोध कर सके। गांधीजी के नैतिक चिन्तन को धार्मिक नीतिशास्त्र कहा जाता है। गांधीजी, सत्य के साक्षात्कार को मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य मानते है और सत्य को ईश्वर का समानार्थक समझते है। इस प्रकार सत्य का साक्षात्कार, ईश्वर के साक्षात्कार के समान बन जाता है। गांधीजी यह मानते है कि उचित आचरण वह है, जो सत्य अथवा ईश्वर के साक्षात्कार में सहायक होता है। सत्य के विविध रूप में इसका सर्वोच्च आदर्श सर्वोदय है। सर्वोदय गांधीजी के दर्शन का केन्द्रीय विचारधारा है। सर्वोदय शब्द सर्व और उदय के सन्धि से बना है। सर्व का तात्पर्य संकुचित रूप में समस्त मानव तथा व्यापक रूप से सम्पूर्ण सृष्टि का समावेशन है। इसी प्रकार उदय का तात्पर्य भी सर्वांगीण विकास है जिसमें भौतिक विकास से लेकर नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास तक सम्मिलित है। अतः सर्वोदय का संकीर्ण अर्थ है समस्त मनुष्यों का समग्र विकास तथा इसका व्यापक अर्थ है अखिल सृष्टि का समग्र विकास।

सर्वोदय की अवधारणा गांधीजी ने जांन रस्किन की पुस्तक न्दजव जीपे सेंज से ली है। इसमें यह उल्लेख मिलता है कि भुगतान सदैव आवश्यकतानुसार होना चाहिए योग्यता अथवा क्षमता के अनुसार नहीं। कमजोर, बीमार एवं अक्षम व्यक्ति को भी उसकी आवश्यकता के अनुपात में प्राप्ति होनी चाहिए तभी समाज का समुचित विकास होगा। रस्किन ने एक आदर्श समाज का चित्र खींचने का प्रयास किया है जिसमें कोई भी सदस्य भूखा, नंगा, दुखी एवं विपन्न न हो। इस प्रकार की मंगलकामना का उदाहरण भारतीय साहित्य में भी मिलता है इसलिए कुछ लोग यह मानते है कि सर्वोदय अवधारणा की प्रेरणा गांधीजी को निम्न श्लोक से मिली होगी–

> ''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिरदुः खभाग्भवेत।।''

इस श्लोक में सबकें सुखी, निरोग और कल्याण की कामना की गयी है। ऐसी स्थिति में सबके कल्याण की कामना हेतु जान रस्किन से प्रेरित होना अस्वाभाविक लगता है।

गांधीजी ने अपनी पुस्तक सर्वोदय में लिखा है कि सर्वोदय के सिद्धान्त को मैं इस प्रकार समझा हूँ–

1. सबके भलें में अपना भला है।
2. वकील और नाई दोनों के काम की कीमत एक सी होनी चाहिए. क्योंकि आजीविका पाने का हक दोनों को एक सा है। 3. मजदूर और किसान का जीवन ही सच्चा जीवन है।

पहली बात तो मैं जानता था और दूसरों का मुझे आभास हुआ करता था, लेकिन तीसरी तो मेरे विचार क्षेत्र में आई तक न थी। पहली बात में पिछली दोनों बातें समाविष्ट है, यह बात सर्वोदय से मुझे सूर्य के प्रकाश की तरह स्पष्ट दिखाई देने लगी और प्रातः होते ही मैं उसके अनुसार अपनें जीवन को बनाने का प्रयास करने लगा।

गांधीजी ने कर्तव्य एवं अधिकार को एक दूसरे का पूरक मानते हुए कहा है कि बिना अपने कर्तव्य का पालन किये नैतिक रूप से समाज या राज्य से हम किसी भी अधिकार की अपेक्षा नहीं रख सकते है। हमारे कर्तव्य पालन में हमारा अधिकार सुरक्षित है और बिना कर्तव्य के अधिकारों के पीछे भागना मृग मरीचिका है। गांधीजी ने व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक जीवन में आत्मशुद्धि का पूर्णरूप से प्रयोग किया है। गांधीजी ने आत्मशुद्धि पर विशेष बल दिया है। उनका कहना था कि जब तक व्यक्ति स्वयं ईमानदारी से अपने दोषों को दूर नहीं करता है तब तक उसे उपदेश देने का कोई हक नहीं है इस प्रकार स्पष्ट है कि गांधीजी ने नैतिक जीवन के लिए सतत् सावधानी और निरन्तर पुरुषार्थ को आवश्यक माना है।

सत्याग्रह का अर्थ है षकिसी भी त्याग के मूल्य पर सत्य और न्याय पर आरूढ़ रहनें की शक्ति और संकल्प का बोध। गांधीजी ने अहिंसक प्रतिकार की जगह सत्याग्रह शब्द का प्रयोग किया है। उन्होंने अहिंसा के सिद्धान्त को मूर्त रूप देने के लिए इण्डि ओपिनियन में गांधीजी ने लिखा है कि सत्याग्रह में लड़ने वालों के मार्ग में बाहरी कारणों से बिल्कुल अड़चन नहीं आ सकती। उनके ये तो केवल उनकी अपनी कमजोरी ही बाधक होती है। दूसरी ओर साधारण लड़ाई में जो पक्ष हारता है उसके सभी लोग हारे हुए माने जाते है और वह हारते भी है। सत्याग्रह में एक की जीत से दूसरे की हार नहीं होती।

गांधीजी मानते है कि सत्य ईश्वर है। इस कथन में सत्य उतना ही सत्ताबोधक माना गया है, जिनका सत्ताबोधक ईश्वर है। अप्रेल के कथन ईश्वर सत्य है कि स्थान पर गांधीजी ने सत्य ईश्वर है का प्रयोग किया है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि ईश्वर को ई मानने से भी काम चल सकता है किन्तु सत्य को ईश्वर मानना अधिक उपयुक्त है। गांधीजी के दर्शन में सत्य के विविध रूप होते है। गांधीजी की दृष्टि से सत्य का एक रूप अस्पृश्यता उन्मूलन है तो दूसरा रूप नमक कानून को तोड़ना। इसी प्रकार भारत की स्वतंत्रता भी सत्य का ही एक रूप है। लेकिन सम्पूर्ण सत्य सर्वोदय में ही अभिव्यक्त होता है। इस पूर्ण सत्य का ईश्वर के साक्षात्कार अथवा आत्मसाक्षात्कार के समान है। इससे स्पष्ट है कि गांधीजी के दर्शन में सत्य के साक्षात्कार का लक्ष्य वहीं है जो पारम्परिक भारतीय दर्शन में ईश्वर का साक्षात्कार या आत्मसाक्षात्कार का है।

अहिंसा के बिना सत्य की खोज और प्राप्ति असम्भव है अहिंसा और सत्य आपस में इतने मिले है कि उन्हें एक–दूसरे से अलग करना लगभग असम्भव है। वे सिक्के के दो पहलुओं की तरह है अहिंसा साधन है तो सत्य साध्य है। साधन तभी साधन है। जब ये हमारी पहुँच के भीतर हो और इसलिए अहिंसा हमारा सर्वोपरि कर्तव्य है यदि हम साधनों की पवित्रता रखे तो आगे–पीछे हमारी साध्य सिद्धि होकर रहेगी। जब एक बार हमने इस मुद्दे को अच्छी तरह समझ लिया तो अंतिम विजय सुनिश्चित है।

अहिंसा मन वाणी और कर्म से सम्बद्ध होने के कारण त्रिविध है इसकी अभिव्यक्ति के भी अनेक रूप है। जब कोई कायर व्यक्ति किसी हिंसात्मक अन्याय का विरोध नहीं करता, तो वह अहिंसा जैसा प्रतीत होता है। कायरता में कर्म ही हिंसा तो नहीं होती किन्तु मानसिक हिंसा विद्यमान होती है। कायर व्यक्ति अपने विपक्षी का बुरा चाहता और सोचता है। इसलिए इसे अहिंसा नहीं माना जा सकता।

स्वराज्य एक पवित्र शब्द है। यह एक वैदिक शब्द जिसका अर्थ आत्मशासन और आत्मसंयम है। स्वराज से अभिप्राय है लोक सम्मति के अनुसार होने वाला शासन लोक सम्मति का निश्चय देश के बालिग लोगों की बड़ी से बड़ी तादाद के मत के द्वारा हो चाहे स्त्रियां हो या पुरुष इसी देश के हो या इस देश से आकर बस गये हो। ये लोग ऐसे ही जिन्होंने अपने शारीरिक श्रम के द्वारा राज्य की कुछ सेवा की हो और जिन्होंने मतदाताओं की सूची में अपना नाम लिखवा लिया हो। सच्चा स्वराज्य थोड़े लोगों के द्वारा सत्ता प्राप्त कर लेने से नहीं बल्कि जब सत्ता का दुरूपयोग होता है तब सब लोगों के द्वारा उसका प्रतिकार करने की क्षमता प्राप्त करके हासिल किया जा सकता है।

गंधीजी राजनैतिक एवं आर्थिक दोनों ही प्रकार के विकेन्द्रीकरण के पक्ष में थे। वे जीवन भर यही सोचते रहे कि मुख्य रूप से कृषि एवं कुटीर उद्योगों के आधार पर कैसे स्वावलम्बी बना जाय। उनके आदर्श राज्य की प्रमुख विशेषता विकेन्द्रीकृत सत्ता है। वे

सम्पूर्ण भारत में प्राचीन ढंग से स्वतंत्र एवं स्वावलम्बी ग्राम सभाओं की स्थापना करना चाहते थे जिसका आधार ग्राम पंचायते होगी। गांधीजी ने अपने पत्र हरिजन में लिखा है कि गांव की सरकार का परिचालन प्रौढ ग्रामीणों द्वारा वार्षिक चुने गये पांच सदस्यों की पंचायत द्वारा होगा। इसमें स्त्री पुरूष व विभिन्नि वर्गों के लोग भाग लेगे। चूंकि कोई दण्ड विधान नहीं होगा, यह पंचायत कार्यपालिका विधायिका एवं न्यायपालिका का समन्वित रूप होगी जो कि अपने कार्यों को सम्पादित करेगी।

गांधीजी कहते थे कि मेरी दृष्टि में राजनैतिक सत्ता कोई साध्य नहीं है, परन्तु जीवन के प्रत्येक विभाग में लोगों के लिए अपनी हालत सुधार सकने का एक साधन है। राजनैतिक सत्ता का अर्थ है राष्ट्रीय प्रतिनिधियों द्वारा राष्ट्रीय जीवन का नियमन करने की शक्ति अगर राष्ट्रीय जीवन इतना पूर्ण हो जाता है कि वह स्वयं आत्मनियमन करने लगे तो किसी प्रतिनिधित्व को आवश्यकता नहीं रह जाती। उस समय ज्ञानपूर्ण अराजकता की स्थिति हो जाती है। ऐसी स्थिति में हर एक अपना राजा होता है। वह इस ढंग से अपने पर शासन करते हैं कि अपने पड़ोसियों के लिए कभी बाधक नहीं बनता। इसलिए आदर्श अवस्था में कोई राजनैतिक सत्ता नहीं होती, क्योंकि कोई राज्य नहीं होता। परन्तु जीवन में आदर्श की स्थिति कभी पूर्ण नहीं होती है। इसलिए थारों ने कहा है कि जो सबसे कम शासन करे, वही उत्तम सरकार है।

अपना हालत सुधार सकने का एक साधन है। राजनैतिक सत्ता का अर्थ है राष्ट्रीय प्रतिनिधियों द्वारा राष्ट्रीय जीवन का नियमन करने की शक्ति अगर राष्ट्रीय जीवन इतना पूर्ण हो जाता है कि वह स्वयं आत्मनियमन करने लगे तो किसी प्रतिनिधित्व की आवश्यकता नहीं रह जाती। उस समय ज्ञानपूर्ण अराजकता की स्थिति हो जाती है। ऐसी स्थिति में हर एक अपना राजा होता है। वह इस ढंग से अपने पर शासन करते है कि अपने पडोसियों के लिए कभी बाधक नहीं बनता। इसलिए आदर्श अवस्था में कोई राजनैतिक सत्ता नहीं होती, क्योंकि कोई राज्य नहीं होता। परन्तु जीवन में आदर्श की स्थिति कभी पूर्ण नहीं होती है। इसलिए थारों ने कहा है कि जो सबसे कम शासन करे वही उत्तम सरकार है।

सर्वोदय दर्शन में सत्ता का विकेन्द्रीकरण करते हुए ग्रामराज्य की अवधारणा का विकास किया गया। ग्रामराज्य के आदर्श का प्रमुख लक्ष्य यह था कि शक्ति कम होने पर इस इकाई के भ्रष्ट होने की संभावना कम होगी क्योंकि शक्ति एवं भ्रष्टता परस्पर समानुपाती होते हैं। भ्रष्टता से बचने के लिए शक्ति की अत्यन्त छोटी इकाई के रूप में ग्रामराज्य की कल्पना की गयी है। गांधीजी का विचार था कि गांव का शासन प्रतिवर्ष गांव के सभी वयस्क स्त्री–पुरुषों की राय से चुने गये पांच पंचों की राय में होगा। गांव की यही पंचायत गांव के लिए एक साथ न्यायपालिका कार्यपालिका एवं संसद का कार्य करेगी।

गांधीजी कहते है कि भारत का ही नहीं बल्कि सारी दुनिया की अर्थ रचना ऐसी होनी चाहिए कि किसी को भी अन्न और वस्त्र के अभाव की तकलीफ न सहनी पड़े। दूसरे शब्दों में हर एक को इतना काम अवश्य मिल जाना चाहिए कि वह अपने खाने–पहनने की जरूरतें पूरी कर सके और यह आदर्श निरपवाद रूप से तभी कार्यन्वित किया जा सकता है, जब जीवन की प्राथमिक आवश्यक के उत्पादन के साधन जनता के नियंत्रण में रहें। वे हर एक को बिना किसी बाधा के उसी तरह उपलब्ध होना चाहिए जिस तरह भगवान की दी हुई हवा और पानी उपलब्ध हैं। किसी भी हालत में वे दूसरों के शोषण के लिए चलाये जाने वाले व्यापार का न बने। किसी भी देश राष्ट्र या समुदाय का उन पर अधिकार अन्यायपूर्ण होगा। हम आज न केवल अपने इस देश में बल्कि दुनिय के दूसरे देशों में गरीबी देखते है तो उसका कारण इस सिद्धान्त की उपेक्षा ही है।

गांधीजी ने अपने ट्रस्टी सम्बन्धी अवधारणा स्नेल की पुस्तक Principles of Equity और गीता से लिया था। गांधीजी ने यह इण्डिया में लिखा है कि "मजदूर और पूंजीपति मिलकर से एक परिवार के रूप में परस्पर भलाई एवं विकास के लिए साथ–साथ कार्य करे।" इस प्रकार वह चाहते थे कि पूंजीपति स्वयं को ट्रस्टी माने व श्रमिको को भी सहभागी बनाये, जिसके परिश्रम पर वे अपनी पूज का विस्तार करते हैं। ट्रस्टीशिप का यह उद्देश्य पूंजीवाद को समाप्त करेगा न कि पूंजीपतियों को।

गांधीजी का ट्रस्टीशिप सिद्धान्त किसी भी धनी व्यक्ति को आवश्यकता से अधिक जमीन एवं सम्पत्ति का संरक्षक मात्र बताता है। गांधीजी का विचार था कि मालिकों के पास जो सम्पत्ति है उसका उन्हें संरक्षक (ट्रस्टी) मानना चाहिए और उस सम्पत्ति का विनियोग जन कल्याण के लिए होना चाहिए। ट्रस्टीशिप सिद्धान्त के द्वारा गांधी जी ने आर्थिक असमानता को दूर करने की बात की। उनके अनुसार समाज में विषमता का तब तक उन्मूलन सम्भव नहीं है जब तक समाज का प्रत्येक अंग चाहे वह धनी है या गरीब, अपने कर्तव्य और अपने दोषों के प्रति नैतिक रूप से सचेत और जागृत न हो जाय।

निष्कर्ष

संक्षेप में गांधीजी केवल हिन्दुस्तान ही नहीं बल्कि पुरे दुनिया के पिता हैं। यह गौरव की गांधीजी का नाम पर सम्मान के साथ पुरे विश्व में लिया जाता है और लोग उनकी बातों पर अमल भी कर रहे हैं। उनकी समस्त विशेषताएँ हर व्यक्ति को आर्कषित करती है और आज का युवा पीढ़ी गांधीजी से प्रभावित हो रहे हैं। उनका विचार स्थायी है और हमेशा रहेगा। इस प्रकार गांधीजी का विचार वर्तमान समय में भी शाश्वत ही नहीं बल्कि प्राशंसिक भी हैं।

गांधीजी भारत की प्राचीन वर्ण व्यवस्था को स्वीकार करते थे परन्तु जातिप्रथा का तीव्र विरोध करते थे। वे यह भी मानते थे कि दूषित जाति प्रथा के लिए कुछ हद तक वर्ण व्यवस्था भी उत्तरदायी है। उन्होंने लिखा है कि मैं यह मानता हूं कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी कुछ नैसर्गिक प्रतिभाओं को लेकर जन्म लेता है। उसी तरह सभी को अपनी सीमाएं होती है जिन्हें यह हटा भी नहीं सकते। इन्हीं सब बातों के आधार पर वर्णव्यवस्था का निर्माण हुआ था। व्यक्तियों के गुण व कर्म के अनुसार समाज का विभाजन हुआ। वर्ण व्यवस्था में कार्य विभाजन की दृष्टि से समाज का विभाजन है किन्तु उसमें ऊँच–नीच का कोई सवाल नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति अपना कर्तव्य पालन करते हुए उच्चतम स्थान प्राप्त कर सकता है। मेरा यह भी विश्वास है कि कोई आदर्श समाज व्यवस्था इन्हीं आदर्शों और सिद्धान्तों के आधार पर खड़ाकिया जा सकता है।

सन्दर्भ

1. श्री रामनाथ सुमन उत्तर प्रदेश में गांधी जी सूचना विभाग, लखनऊ 1969 पृष्ट 63
2. वही, पृ० 4
3. डॉ० जटाशंकर पाण्डेय नैतिक दर्शन के विविध आयाम, श्री भुवनेश्वरी प्रतिष्ठान, इलाहाबाद 2003 पृष्ठ 107
4. वही पृ० 109
5. रस्किन : अन टू दिस लास्ट
6. डॉ० जटाशंकर पाण्डेय नैतिक दर्शन के विविध आयाम, श्री भुवनेश्वरी प्रतिष्ठान, इलाहाबाद 2003 पृष्ठ 110
7. गांधीजी (सम्पा भारतम् कुमारप्पा) सर्वोदय, नवजीवन प्रकाशन मंदि, अहमदाबाद 2015 पृष्ठ 2
8. एच.एल. पाण्डेय गांधी, नेहरू टैगोर एवं अम्बेडकर प्रयाग, पुस्तक भवन, इलाहाबाद 2002 पृष्ठ 32
9. वही, पृ० 33

10. सम्पूर्ण गांधी वांगमय अध्याय 9 पृ० 25
11. एच. एन पाण्डेय गांधी नेहरू टैगोर एवं अम्बेडकर प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद 2002, पृ० 35
12. डॉ. जटाशंकर नैतिक दर्शन के विविध आयाम श्री भुवनेश्वरी विद्या प्रतिष्ठान इलाहाबाद 2003, पृ० 113
13. मंगल प्रभात, पृ० 7–9
14. डॉ. जटाशंकर नैतिक दर्शन के विविध आयाम, श्री भुवनेश्वरी विद्या प्रतिष्ठान, इलाहाबाद 2003, पृ० 113
15. हरिजन 05.09.1936